ISSN No. 2349-4654
नाद-नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूज़िक
वर्ष : 4, अंक : 1, जनवरी 2017

बिन्दादीन महाराज की सांगीतिक रचनाओं में भावाभिव्यक्ति

गरिमा आर्य

शोधार्थी, संगीत एवं ललित कला संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

नृत्य प्राणी-मात्र के आंतरिक उल्लास और हृदयगत आनन्द को अभिव्यक्त करने की एक सहज व स्वाभाविक प्रक्रिया है। सृष्टि के प्रारम्भ में भाषा के विकास से पहले ही आदि-मानव ने अपने भावों को व्यक्त करने के लिए संकेतों का सहारा लिया और यहीं से नृत्यकला का प्रादुर्भाव हुआ।

भारतीय शास्त्रीय नृत्य विधाओं में कथक नृत्य का प्रमुख स्थान है। 'कथक' उत्तर भारत की प्रमुख नृत्य-विधा है तथा कथक के लखनऊ घराने के बिन्दादीन महाराज जी ने अपनी अनेकानेक सांगीतिक रचनाओं से इस विधा में एक महत्त्वपूर्ण एवं प्रशंसनीय योगदान दिया है। कथक नृत्य को शास्त्रबद्ध करते हुए व्यवस्थित रूप देने का श्रेय 'बिन्दादीन महाराज' जी को जाता है। कला प्रदर्शन की शैली की रोचकता बनाने के लिए बिन्दादीन महाराज ने उसे नया रूप देते हुए, विभिन्न भावों में अनेकों रचनाओं—ठुमरी, दादरा, होरी, भजन, सादरा आदि का निर्माण कर संगीत जगत को बहुमूल्य उपहार दिया।

श्री बिन्दादीन महाराज जी का जन्म 1938 ई. को लखनऊ में हुआ। इनका नृत्य प्रशिक्षण करीब नौ वर्ष की आयु में प्रारम्भ हो गया था। कई वर्षों तक इन्होंने कठोर अभ्यास किया तथा इस दौरान उन्होंने केवल चार बोल, 'तिग, दा, दिग, दिग' का ही रियाज़ किया और उसमें प्रवीणता हासिल की।[1]

बिन्दादीन महाराज जी ने अपने परिश्रम और प्रतिभा के बल पर 12 वर्ष की आयु में बहुत नाम कमाया, इसका एक उदाहरण देते हुए पंडित बिरजू महाराज जी ने बताया—''नवाब वाजिद अली शाह के दरबार में 12-13 वर्षीय बिन्दादीन महाराज जी का मुकाबला प्रख्यात पखावजी श्री कुदऊसिंह जी से हुआ। केवल चार बोल 'ता थई थई तत' और 'तक घुम किट तक' के इस मुकाबले में अतिद्रुत लय में कुदऊसिंह जी तीन बोल बजाने लगे और बिन्दादीन महाराज अपने चार बोल की तत्कार पर कायम रहे। इस प्रकार बिन्दादीन महाराज जी 12-13 वर्ष की अल्पायु में उस मुकाबले में विजयी हुए।''[2]

मूल रूप से बिन्दादीन महाराज इलाहाबाद के हंडिया तहसील के थे। इनके पूर्वज वहीं से थे, जिनमें ईश्वरी प्रसाद जी भगवान श्रीकृष्ण को ईष्ट-देवता मानकर 'कथक नटवरी नृत्य' को आगे बढ़ाने के कार्य में जुट गये तथा अपने वंशजों को इस कला की शिक्षा दी और उन्हें भी कथक नृत्य विधा को आगे बढ़ाते जाने का आदेश दिया। इन्हीं के पौत्र प्रकाश जी आसफउद्दौला के काल में लखनऊ आ बसे और उनके दरबार में नर्तक बन गये तथा इन्हीं के पुत्र दुर्गाप्रसाद जी तथा ठाकुर प्रसाद जी नवाब वाजिद अली शाह के सुप्रसिद्ध दरबारी नर्तक बने। बाद में दुर्गाप्रसाद जी के दोनों पुत्रों 'बिन्दादीन महाराज' और 'कालका प्रसाद महाराज' ने 'कालका बिन्दादीन' की युगल जोड़ी के रूप में देशभर में ख्याति प्राप्त की। इसीलिए लखनऊ घराने को पहले 'कालका-बिन्दादीन' घराने के नाम से सम्बोधित किया जाता था।

बिन्दादीन महाराज जी श्रीकृष्ण भगवान के परम भक्त थे, मुस्लिम दरबारों में रहने के बावजूद इन्होंने हिन्दू धर्म के अनुसार जीवन व्यतीत किया तथा अपनी सांगीतिक रचनाएँ भी इन्होंने ईश्वर की प्रशस्ति में रचीं। इन्होंने लगभग 1500 ठुमरियों की रचना की।[3] इसके अतिरिक्त बिन्दादीन महाराज जी ने अनेकों अन्य रचनाएँ—भजन, दादरा, पद, होरी आदि लिखे अनुसार भाव तथा उनमें अंग निर्माण करके आश्चर्यजनक कार्य किया, साथ ही नई-नई गत निकास तथा गतभाव का भी निर्माण किया। एक पत्रिका में डॉ. आनन्द के कुमरस्वामी जी ने बिन्दादीन महाराज जी का वर्णन देते हुए लिखा—

"I have never seen, nor do I hope to see better acting than I saw in Lucknow, when an old man... a poet and dancer and a teacher of many, many dancing girls sang a Herd-Girl's complaint to the mother of Krishna."[4]

बिन्दादीन महाराज जी से प्रेरित होकर उन्हीं के वर्तमान समय के वंशज प्रख्यात कथक सम्राट 'पंडित बिरजू महाराज जी' ने भी संगीत जगत को अपनी विभिन्न बहुमूल्य भावपूर्ण रचनाऐं प्रदान की हैं। जिन्हें कलाकार अपनी कथक नृत्य की प्रस्तुतियों में प्रयोग करते हैं।

बिन्दादीन महाराज की भावपूर्ण रचनाएँ

महाराज बिन्दादीन जी का कथक नृत्य के लिए सबसे अद्‌भुत योगदान भावाभिनय द्वारा विभिन्न नायिकाओं का चित्रण व कथक के इस अपेक्षित पहलु के लिए उनकी फलदायक रचनाएँ हैं। ये मात्रा विलक्षण नर्तक ही नहीं थे अपितु उन्होंने लयामक कविता पर आधारित सैकड़ों बंदिशों, जो कि भिन्न रागों तथा विभिन्न तालों में थीं, के अलावा ठुमरी, ध्रुपद, सादरा, दादरा व भजन जैसी विभिन्न शैलियों में अतिसुंदर रचनाएँ भी कीं। इनकी रचनाओं की कथा-वस्तु मुख्यत: राधा-कृष्ण के प्रेम, अलगाव, कामनाएँ, विरह, पुर्नमिलन, ब्रजगापियों की लालसायें, ब्रज में होरी

आदि पर आधारित होती थीं। इसके अलावा भगवान रामचन्द्र जी से सम्बन्धित रचनाएँ भी इन्होंने की।

बिन्दादीन महाराज ने अपनी रचनाओं में अवधी और ब्रजभाषा का प्रयोग किया है, पंडित बिरजू महाराज जी ने निम्न बंदिशों के कठिन शब्दों को सरल हिन्दी में समझाने का महान कार्य किया है, ताकि कलाकार अपनी कल्पना की पृष्ठभूमि में इन्हें बसाकर भावों का प्रदर्शन कर सके।

बिन्दादीन महाराज द्वारा रचित कुछ रचनाओं का उल्लेख इस प्रकार है—

1. *ठुमरी*
राग—मिश्र श्याम कल्याण
ताल—दादरा
काहे रोकत डगर प्यारे नन्दलाल मेरे।।
नित ही करत झगरा हमसे, पनघट नाहीं जाने देत
देखत सब नारी मोरी, बहियाँ क्यों गहे रे।।
काहे ....
बिनती करूँ मैं नाहीं वो मानत, सुनत नाहीं मेरी
छीन लीन्हों है गले का हार, माँगू नाहीं दे रे।।
काहे ...
'बिन्दा' देखो दीठ लंगर, बरबस मोरी लाज लेत
दूँगी दुहाई अबही जाए, नंदी जी के डेरे।। [5]

शब्दार्थ : (नितही—प्रतिदिन, झगरा—झगड़ा, लीन्हो—लिया, डेरे—घर, गहेरे—पकड़ना, लंगर—लड़का।)

प्रस्तुत ठुमरी 'काहे रोकत डगर प्यारे' लखनऊ घराने की प्रचलित ठुमरी है। यह ठुमरी राग-मिश्र श्याम कल्याण पर आधारित है तथा दादरा ताल में निबद्ध है।

इस ठुमरी की जो दृश्यात्मकता है उसका स्थान बीच डगर यानि रास्ते के बीच में है। समय काल गोधूलि और पात्र 'प्रगल्भा नायिका' है, जिसकी अनुमानित आयु करीब 20 से 25 वर्ष के बीच में है।

इस ठुमरी में जो भाव उत्पन्न होता है, वह यह है कि लोगों की दृष्टि देखकर गोपी लजाते हुए कृष्ण को तरह-तरह से समझाने का प्रयास कर रही है। कभी विनती करती है, कभी नाराज़ हो जाती है। गोपी द्वारा नंदबाबा का भय जताने पर भी कृष्ण ने अपनी मनमानी की और डगर रोके खड़े रहे।

2. *दादरा*
राग—गारा
ताल—दादरा
कैसे के जाऊँ श्याम रोके डगरिया।
बरबस कर पकरत मुख चूमत
लाज लेत देखो बीच बजरिया।
कैसे के ...
निज की रार सहूँ कैसे 'बिन्दा'
नाही बसूँ तजूँ तोरी नगरिया।
कैसे के ... [6]

शब्दार्थ : (डगरिया—रास्ता, बरबस—जबरदस्ती, बजरिया—बाज़ार, रार—झगड़ा, तजूँ—छोड़ूँ।)

प्रस्तुत दादरा 'कैसे के जाऊँ श्याम रोके' राग 'गारा' पर आधारित है तथा ताल—दादरा में निबद्ध है। इस दादरा के प्रसंग का स्थान 'कुंजवन' है तथा अपराह्न काल का समय है। इसमें पात्र 'मुग्धा नायिका' है, जिसकी अनुमानित आयु 16 से 18 वर्ष तक है। इस ठुमरी के भाव के अंतर्गत कृष्ण के रोज-रोज के झगड़े से तंग आकर नायिका अथवा गोपी उनसे कहती है कि वे नगर छोड़ देगी और अन्यत्र कहीं चली जायेगी। गोपियाँ कृष्ण के नित्य व्यवहार के बारे में आपस में चर्चा करती हैं।

3. *होरी*
राग—मिश्र खमाज
ताल—रूपक
मैं तो खेलूँगी उन्हीं से होरी गुईयाँ।
मैं तो ...
लैके अबीर गुलाल कुमकुम
रंग से भरी पिचकारी गुईयाँ।
मैं तो ...
जाये घेरूँ डगर नहीं जाने दूँ घर
ऐसो ढीठ लंगर नहीं माने निडर
आज श्याम सुन्दर से रंग मचा
'बिन्दा' लाऊँगी गहे बरजोरी।
मैं तो ... [7]

शब्दार्थ : (उनहीं—उनसे, गुईयाँ—सहेली, ढीठ लंगर—चतुर चपल, गहे—पकड़ना, बरजोरी—ज़बरदस्ती।)

प्रस्तुत होरी प्रसंग का स्थान 'चैमुहानी' या चैराहा है तथा इसका समय दिन के प्रथम प्रहर से द्वितीय प्रहर तक है। इसमें पात्र—राधा व सखियाँ हैं जिनकी उम्र मिली जुली है। इस टोली की रचना में विशेषकर कृष्ण से होली खेलने की चर्चा की गई है। पूरा वातावरण अबीर एवं गुलाल के रंगों से भर गया है। गोपियों ने ठान रखी है कि आज कृष्ण को हम सब घेर कर उनको रंग में डुबो देंगे और रोज-रोज की रार व छेड़खानी का बदला लेंगे। सभी गोपियों ने मिलकर कृष्ण को पकड़ा और अपनी मनमानी की एवं कृष्ण को अनेक रंगों से सरोबार करते हुए आनंदित हो उठीं। इस रचना ने उमंग भरे भावों का प्रदर्शन तथा ताल के अनुसार पर संचालन का प्रयोग करने से इसकी खूबसूरती और भी भव्य हो जाती है।

बिन्दादीन महाराज कृत इन प्रस्तुत रचनाओं में सांगीतिक एवं भावात्मक पक्ष अत्यन्त सुन्दर परीलक्षित होता है। इस प्रकार अनेकानेक ठुमरियाँ, दादरा, होरी, भजन, सादरा आदि सांगीतिक रचनाएँ बिन्दादीन महाराज जी ने संगीत जगत में अपने महत्त्वपूर्ण योगदान के रूप में प्रदान की हैं, जिनके लिए उन्हें सदैव याद रखा जाएगा।

पाद-टिप्पणियाँ

1. आनन्द, मधुकर, कथक का लखनऊ घराना और पं. बिरजू महाराज, कनिष्क पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, संस्करण 2013, पृ. 125
2. साक्षात्कार पदम् विभूषण पंडित बिरजू महाराज जी।
3. मोनिका सिंह, कथक और अभिनय, स्वाति पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण: 2013, पृ. 26
4. Nartam - A quarterly journal of India dance, Vol. VII, No.2, April-July, 2007, Dr. Anand K. Coomaraswamy on Maharaj Bindadin.
5. रस गुंजन, महाराज बिन्दादीन की रचनाएँ, कला हेतु, बिरजू महाराज, पृ. 5
6. वही, पृ. 46
7. वही, पृ. 54